**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 19-12-2022, Accepted: 05-01-2023, Published: 21-01-2023**
**Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 10-12**

# विश्व पटल पर हिन्दी भाषा का विकास

**डॉ॰ सुशीला यादव**
सहायक आचार्य हिन्दी, बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महविद्यालय नांगल चौधरी, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, भारत

**सारांश**
"हिन्दी मेरी भाषा है, हिन्दी मेरी आशा है
हिन्दी का उत्थान करना यही मेरी जिज्ञासा है।"
अब हिंदी न केवल भारत की बल्कि विश्व की भाषा बन चुकी है। संसार के विविध क्षेत्रों में हिंदी करोड़ों लोगों की जीविका बन चुकी है। आज भारत के अलावा बंग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, भूटान, फिज़ी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड एवं टुबेगो, द.अफ्रिका, बहरीन, कुवैत, ओमान, कत्तर, सऊदी अरब गण राज्य, श्रीलंका, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, मॉरिशस और ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में हिंदी की माँग बढती ही जा रही है। हिंदी वह भाषा है जो संस्कृत, प्राकृत, पाली के सहज एवं सरलतम रूप में आम जीवन में घुली मिली है। जिस तरह से भारत की सनातन संस्कृति आस्तिक–नास्तिक का भेद किए बगैर सबको साथ लेकर चलने में भरोसा रखती है, ठीक उसी तरह हिंदी का संसार भी बहुत विराट है। निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल.. यानी अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है । भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रसिद्ध कविता निज भाषा आज भी प्रासंगिक है। आज हम अपने देश में भले ही अंग्रेजी को लेकर गर्व की अनुभूति करें, ब्रिटेन में हिंदी बोलकर और लिखकर भी कई लोगों ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

**मूल शब्दः** अध्ययन, व्यवस्था, अधिकारीक, प्रतिनिधि अन्तरराष्ट्रीय, सांस्कृतिक, भारतीय प्रौद्योगिकी, नागरिकों, संस्कारो, मौलिक, उन्नत, व्यापक, अत्यंत, विविधता

हिन्दी का भाषाई रूतबा हमेशा से अच्छा रहा है। वैश्विक पटल पर हिन्दी की धमक और चमक लगातार सुनहरी होती जा रही है। वर्ल्ड लेंग्वेज डाटाबेस के 22 वें संस्करण इथोनोलॉज में भी बताया गया है कि हिन्दी दुनियाभर के माथे की बिंदी बनती जा रही है। दुनिया की 20 सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में 6 भारतीय है जिनमें हिन्दी तीसरे स्थान पर है। हिन्दी को दुनिया भर में 63.7 करोड़ लोग बोलते है। विश्व की भाषा बनने के सभी गुण हिंदी में विद्यमान है। बिसवीं सदी के अन्तिम दो दशकों से हम देख रहे है कि हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है। हिंदी एशिया के व्यापारिक जगत में धीरे धीरे अपना स्वरूप बिंबित कर भविष्य की अग्रणी भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर रही है। बेब विज्ञापन, संगीत सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिन्दी की मांग जिस तेजी से बढ़ी है वैसी किसी और भाषा में नहीं। विश्व के लगभग 176 विश्वविद्यालयों में तथा सेंकड़ों छोटे–बड़े केन्द्रों से लेकर शोध स्तर तक हिन्दी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था हुई है। अमेरिका के ही 30 से भी ज्यादा विश्वविद्यालयों मे भाषायी पाठ्यक्रमों में हिन्दी को महत्वपूर्ण दर्जा मिला हुआ है। दक्षिण प्रशांत महासागर के देश फिजी में तो हिन्दी को राजभाषा का अधिकारीक दर्जा मिला हुआ हैद्य फिजी में इसे फिजियन हिन्दी भी कहा जाता है जो अवधि, भोजपुरी और अन्य बोलियो का मिला–जुला रूप है। विश्व में लगभग 25 से अधिक पत्र–पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। यूएई के 'हम एफ एम' सहित अनेक देश हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं जिनमें बीबीसी जर्मनी के डॉयचे वेले, जापान के एन एच के वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। चीन के 17 विश्वविद्यालयों में हिन्दी साहित्य भी पढ़ाया जाता है। 15 अगस्त 2015 से चीन की जनता में हिंदी भाषा सीखने की रुचि को देखते हुए हर रविवार को रेडियो पर बीस मिनट का एक कार्यक्रम शुरू किया है। जिसका नाम ग्नम ग्प ल्पदकपलन श्रपम डन या "आओ हिन्दी सीखें' है। इसके अन्तर्गत एक चीनी परिवार जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के एक शिक्षक के समक्ष हिन्दी भाषा सीखते हुए सुनाई देता है। इसके अलावा चीन में हिन्दी सीखने वाले छात्रों को रामायण भी पढ़ाई जाती है।

विश्व में हिन्दी का विकास करने और एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के तौर पर इसे प्रचारित–प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था। इसलिए इस दिन को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। हिन्दी के विकास के लिए आचार्य विनोबा भावे ने कहा कि मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता । महात्मा गांधी जी ने भी कहा था "अगर हिंदुस्तान को सचमुच आगे बढाना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है द्यक्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता"।[1] हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए विदेशी लेखकों व साहित्यकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जैसे मैक्समूलर, स्लेगन, सिल्वालेवी, फादर कामिल बुल्के आदि। फादर कामिल बुल्के ने अपने लेख में लिखा है कि 35 वर्ष पहले सन् 1982 के आस पास मेरे एक मित्र ने जावा में एक मुस्लिम शिक्षक को रामायण पढ़ते देखा तो पूछा कि आप तो मुस्लिम हो फिर रामायण क्यों पढ़ते हो तो उत्तर मिला मैं अच्छा इन्सान बनने के लिए रामायण पढ़ता हूँ।

फादर कामिल बुल्के ने हिन्दी के विषय में कहा था कि हिन्दी न केवल देश के करोड़ों लोगों कि सांस्कृतिक व सम्पर्क भाषा है वरन बोलने और समझने वालों की संख्या की दृष्टि से तीसरी भाषा है। विदेशी लेखक एच० टी० कोलब्रुक ने 'एशियाटिक रिसर्च' में लिखा थाकृ "जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रांत के लोग करते हैं, जो पढ़े–लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा है और जिसको प्रत्येक गॉव में थोड़े–बहुत लोग अवश्य समझ लेते हैं, उसी का यथार्य नाम हिन्दी है"[2]।

हिन्दी के इस विकास में हम दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का योगदान को भी नहीं भूला सकते। उन्होंने सन् 1977 में हिन्दी भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ स्थान स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई है। वाजपेयी जी ने 1977 ई0 में संयुक्त राष्ट्र महासभा को सम्बोधित करते हुए अपना भाषण हिन्दी में दिया था क्योंकि यह वैश्विक मंच पर प्रमुख भाषा होने का प्रमाण था। इनके बाद 10 जनवरी 2006 को हर साल विश्व हिन्दी दिवस के रूप मनाए जाने की घोषणा पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह की ने की थीद्य भारतीय 'दूतावास विदेशों में विश्व हिंदी दिवस के मौके पर विशेष आयोजन करते हैं. सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिंदी में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। नॉर्वे में पहला विश्व हिंदी दिवस भारतीय दूतावास ने मनाया था. इसके बाद दूसरा और तीसरा विश्व हिंदी दिवस भारतीय नॉर्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम के तत्वाधान में लेखक सुरेशचन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में बहुत धूमधाम से मनाया गया था।

हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की सम्पर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिन्दी जन आन्दोलन की भी भाषा रही है। हिन्दी के महत्व को गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बड़े सुन्दर रूप में कहा कि भारतीय भाषाएँ नदियाँ है और हिन्दी महानदी है। महायोगी श्री अरविन्द ने कहा– "अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए हिन्दी को सामान्य भाषा के रूप में जानकर हम प्रान्तीय भेदभाव नष्ट कर सकते हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस 1918 ई० में कलकत्ता कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष थे। उन्होंने अपना अभिभाषण हिन्दी में पढ़ा और कहा कि "हिन्दी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से लिया जाता है वह आगे चलकर हिन्दी से लिया जाएगा।"[3] हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कम्पनियाँ इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही है। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनियाँ में हिन्दी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान–विज्ञान की पुस्तके बड़े पैमाने पर हिन्दी में लिखी जा रही है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग निरन्तर बढ़ रहा है। भारत के सभी मंत्रालयों में और विभागों ने अपनी वेबसाइटें हिन्दी में भी तैयार कर ली है। सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिन्दी में मिलने लगी है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा एवं मातृ भाषा के रूप में स्थापित हो गई है। इस मातृभाषा के लिए महात्मा गाँधीजी भी कहते है कि "मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हो मैं इससे इसी तरह चिपटा रहूंगा जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से। यही मुझे जीवनदायी दूध दे सकती है। अगर अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है जिसकी वह हकदार नहीं है, तो मै उससे सख्त नफरत करुंगा। यह कुछ लोगों के सीखने की वस्तु हो सकती है लाखों करोडो की नहीं।"–[4] हिन्दी न सिर्फ़ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक,सम्प्रेषक और परिचायक भी है।

देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की है। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओ के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिन्दी सम्मेलन और अन्य अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष "प्रवासी भारतीय दिवस" मनाया जाता है जिसमें विश्व भर में रहने वाले प्रवासी भारतीय लोग भाग लेते हैं। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नई पहचान मिली है।

14 सितम्बर 2017 को राजभाषा विभाग द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने देशभर के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के कर्मचारियों को हिन्दी भाषा में उत्कृष्ट कार्य करने पर पुरस्कृत किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हिन्दी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है। किसी भी भाषा की तरह हिन्दी भी मौलिक सोच की भाषा है और मुझे इस बात की खुशी है कि आज सरकार के कर्मचारियो तथा नागरिकों को मौलिक पुस्तक लेखन के लिए पुरस्कार दिए गये हैं।

इसी अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी सभी देशवासियों को हिन्दी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए इस मोके पर राजभाषा विभाग द्वारा सी डेक के सहयोग से तैयार किए गये लर्निंग इंडियन लैंग्वेज विद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (लीला) के मोबाइल ऐप का लोकार्पण भी किया गया। इस ऐप से देश भर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से जनसामान्य को हिन्दी सीखने में सुविधा और सरलता होगी तथा हिन्दी भाषा को समझना और सीखाना तथा कार्य करना संभव हो सकेगा। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अनेक पुरस्कार योजनाएं शुरू की है। सरकार द्वारा हिन्दी में अच्छे कार्य के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना" के अन्तर्गत शील्ड प्रदान की जाती है। हिन्दी में लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार का प्रावधान किया गया है। विश्वभर में हिन्दी की बढ़ती स्वीकार्यता का ही असर है कि वर्ष 2017 में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भी पहली बार 'अच्छा', 'बड़ा 'दिन', 'बच्चा' और 'सूर्य नमस्कार' जैसे हिन्दी शब्दों को सम्मिलित किया गया। अमेरिका की 'ग्लोबल लैंग्वेज मॉनीटर' संस्था ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि अंग्रेजी भाषा में करीब 10 लाख शब्द हैं, वहीं हिन्दी में करीब 1 लाख 20 हजार शब्दों का समृद्ध कोश है। हिन्दी शब्द कोश में लगातार वृद्धि हो रही है। तकनीकी रूप से हिन्दी को और ज्यादा उन्नत, समृद्ध तथा आसान बनाने के लिए अब कई सॉफ्टवेयर भी हिन्दी के लिए बन रहे हैं।

हिन्दी हमारी आपकी और हम सब की भाषा है। आज हिन्दी भाषा हर विषय में, हर क्षेत्र में अपना ध्वज फहराते हुए आगे बढ़ती जा रही है। चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या इंटरनेट की दुनिया, सब जगह हिंदी का बोलबाला है। इस बात के लिए हम सब अपनी पीठ थपथपा सकते हैं क्योंकि किसी भाषा के आगे बढ़ने में उस भाषा को बोलने वाले, लिखने वाले, पढने वाले लोगों का योगदान होता है। जहाँ तक विदेश में हिंदी का सवाल है पिछले दो तीन दशकों में स्थिति बदली है। खासकर 1990 के बाद जब से आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण कि प्रक्रिया शुरु हुई तब से कम से कम तीन क्षेत्रों में विदशी लोगों का ध्यान हिन्दी की तरफ गया है। पहला आर्थिक उत्पादन के क्षेत्र में कम्पनियों का ध्यान इस तरफ गया है कि आबादी के लिहाज से भारत एक विशाल बाजार है। इसलिए ऐसे लोगों की जरूरत जिन्हें हिन्दी आती हो वो भारतीय बाजार में कार्य कर सके। दूसरा कारण की हिन्दी भाषा से विदेशों में रह रहे लोग अपना ज्ञानार्जन बढ़ाने के लिए इस तरफ आकृष्ट हुए। तीसरा कारण कि हमारी भारतीय फिल्मों ने विदेशों में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाई है। इसके अलावा बीबीसी और जर्मन रेडियो जैसी विदेशी प्रसारण सेवाओं का भी बहुत योगदान रहा है। हिंदी के कई विद्वान विदेशो में जाकर बस गए और वहीं से हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार कर रहे है। इससे भी विदेशों में हिन्दी की लोकप्रियता बढी रही है। एक अध्ययन के मुताबिक

हिंदी सामग्री की खपत करीब 94 फीसद तक बढ़ी है। हर पांच में एक व्यक्ति हिंदी में इंटरनेट प्रयोग करता है। फेसबुक, ट्विटर और वाट्स एप भी हिंदी में लिख सकते हैं। इसके लिए गूगल हिंदी इनपुट, लिपिक डॉट इन, जैसे अनेक सॉफ्टवेयर और स्मार्टफोन एप्लीकेशन मौजूद हैं। हिंदी–अंग्रेजी अनुवाद भी संभव है। सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट ट्विटर की तर्ज पर हिंदी भाषी लोगों के लिए पुणे के अनुराग गौड़ और उनके साथियों ने मूषक नामक सोशल नेटवर्किंग साइट बनाई है। इसमें ट्विटर की 140 शब्द सीमा की अपेक्षा शब्द सीमा पांच सौ है। इसे इंटरनेट पर डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट मूषक डॉट इन पर खोला जा सकता है, साथ ही गूगल प्लेस्टोर से भी डाउनलोड किया जा सकता है। इसमें किसी भी हिंदी शब्द को रोमन में लिखने पर उसका हिंदी विकल्प नीचे आ जाता है। उसे चुनकर हिंदी में लिखा जा सकता है। हिंदी जानने, समझने और बोलने वालों की बढ़ती संख्या के चलते अब विश्व भर की वेबसाइट हिंदी को भी तवज्जो दे रही हैं। ईमेल, ईकॉमर्स, ईबुक, इंटरनेट, एसएमएस एवं वेब जगत में हिंदी को बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आइबीएम तथा ओरेकल जैसी कंपनियां अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढावा दे रही हैं।

## निष्कर्ष

अतः हम कह सकते है कि हिन्दी पूरे विश्व में कही मातृभाषा कही पितृ भाषा तो कहीं तीसरी भाषा के रूप में अवश्य विद्यमान है। हिन्दी बड़ी तेजी से विश्व पटल पर अपना स्थान बना रही है वर्तमान सरकार के द्वारा हिन्दी के लिए किए जा रहे कार्य और प्रधानमंत्री द्वारा विश्वस्तर पर भी विभिन्न मंचो से हिन्दी में भाषण देना कहीं ना कही हिंदी की व्यापकता को दर्शाता है। हिंदी ह्रदय की भाषा है संस्कृत से निकलने के कारण इसमें संस्कृति समाई हुई है विविधता, शांति, समरसता, वसुधैव कुटुंबकम, सर्वे संतु निरामय हिन्दी विश्व को सिखाती है बताती हैं। "लक्ष्मीमल्ल सिंघवी जी ने भी कहा कि–

कोटि कोटि कंठों की भाषा,
जनगण की मुखरित अभिलाषा,
हिन्दी है पहचान हमारी,
हिन्दी हम सबकी परिभाषा।

## संदर्भ सूची


1. डॉ० हरदेव बाहरी, हिन्दी भाषा अभिव्यक्ति प्रकाशन, पृष्ठ संख्या– 158
2. डॉ० हरदेव बाहरी, हिन्दी भाषा अभिव्यक्ति प्रकाशन, पृष्ठ संख्या– 155
3. डॉ० हरदेव बाहरी, हिन्दी भाषा अभिव्यक्ति प्रकाशन, पृष्ठ संख्या– 157
4. हाँ॰ हरदेव बाहरी, हिन्दी भाषा, अभिव्यक्ति प्रकाशम पृष्ठ संख्या'– 148